पाठ - 16

राजा राममोहन राय

शमशान घाट पर चिता सजाई जा चुकी थी। एक स्त्री, जिसके पति का निधन हो गया था, उस चिता पर जीवित जलने के लिए तैयार की जा रही थी। उस स्त्री के देवर ने उपस्थित लोगों का विरोध किया कि यह गलत हो रहा है। उसने कहा -

'यह कहाँ की समझदारी है कि पति के मरने पर उसकी पत्नी जीवित चिता में जल जाये या आप लोगों द्वारा जलने के लिए मजबूर कर दी जाये। यह कुरीति है.... अन्याय है और सरासर अत्याचार है।'

पर उस युवक की किसी ने नहीं सुनी। अन्ततः वही हुआ जो समाज चाहता था। स्त्री चिता पर कूद पड़ी और जीवित जल मरी। इस घटना ने युवक के हृदय को पीड़ा से झकझोर दिया। यहीं से इस युवक ने इस कुरीति को समाप्त करने का बीड़ा उठा लिया।

यह दृढ़ निश्चयी, साहसी और समाज सुधारक युवक राममोहन राय था।

जन्मः - 22 मई 1772 ई0 को पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के गांव राधानगर

पिताः - रामकान्त राय

माताः - तारिणी देवी

मृत्युः - 27 सितम्बर 1833 ई0 इंग्लैण्ड के ब्रिस्टल नगर

राम मोहन राय के समाज सुधार सम्बन्धी कार्य।

सती प्रथा का विरोध

अन्धविश्वासों का विरोध

बहुविवाह विरोध

बाल विवाह विरोध

जाति प्रथा का विरोध

विधवाओं का पुनर्विवाह

पुत्रियों को पिता की सम्पत्ति का भाग दिलवाना

धार्मिक सुधार-ईश्वर एक है

स्त्री पुरूष को बराबरी के अधिकार

राममोहन की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही बंगला भाषा में हुई। बाद में एक मौलवी साहब द्वारा भी उन्हें शिक्षा दी गई। इनकी माँ संस्कृत की विदुषी थीं।
राममोहन राय ने पटना में अरबी तथा फारसी की उच्च शिक्षा प्राप्त की। काशी में इन्हांेने संस्कृत का भी अध्ययन किया, इन्होंने अंग्रेजी भाषा को भी मन लगाकर पढ़ा। इन पर एक तरफ तो सूफी मत का प्रभाव था, तो दूसरी तरफ वेदान्त और उपनिषदों के प्रभाव से इनका व्यक्तित्व उदारवादी विचारों से ओत-प्रोत हो गया।
बीच में कुछ समय के लिए राम मोहन राय तिब्बत भी गये। वहाँ उन्होंने बौद्ध धर्म का अध्ययन किया। इन्होंने जैन धर्म और उसके कल्प सूत्र का भी अध्ययन किया ।
पिता के बुलावे पर ये तिब्बत से वापस आये। थोड़े दिन बाद इनका विवाह कर दिया गया। पारिवारिक जीवन के निर्वाह के लिए इन्हांेने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधीन क्लर्क के पद पर नौकरी कर ली। अपनी मेहनत एवं ईमानदारी के बल पर ये दीवान जैसे उच्च पद पर पहुँच गये। नौकरी में रहते हुए ही इन्होंने अंग्रेजी, लैटिन व ग्रीक आदि भाषाओं को अच्छी तरह सीख लिया।
राम मोहन राय की आयु अभी 40 वर्ष की थी, इन्होंने नौकरी छोड़ दी। इन्होंने कोलकाता में एक कोठी खरीदी और वहीं से समाज सेवा के कार्य करते रहे।
राममोहन राय ने उदारवादी विचार धारा के लोगों को लेकर ‘आत्मीय सभा’ बनाई। इसका प्रमुख उद्देश्य इस बात का प्रचार करना था ‘ईश्वर एक है।’ पर उनके इस कथन से कट्टरपन्थी लोग नाराज हो गये। वे उनके विरुद्ध तर्क-वितर्क करते थे। राम मोहन राय

उनकी शंकाओं के समाधान के लिए लेख लिखते और उदारवादी दृष्टिकोण के प्रति उन्हंें सहमत करते। राममोहन राय ने 'ईश्वर एक है' की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए ब्रह्मसभा की स्थापना की। इसका नाम बाद में बदलकर 'ब्रह्म समाज' कर दिया गया। इसमें भी धर्मों की अच्छी व उदार बातों का समावेश किया गया था।

राममोहन राय ने अपने विचारों को फैलाने के लिए सन् 1821 में 'संवाद कौमुदी' बंगला साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने 1882 ई0 में फारसी में मिरा-ए-तुल अखबार भी प्रकाशित किया। वे अंग्रेजी शिक्षा के पक्षधर थे। उनका मानना था कि पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान भी भारतीयों के लिए लाभकारी है। उन्होंने 1825 ई0 में वेदान्त कालेज की स्थापना की, जिसमें भारतीय विद्या के अलावा सामाजिक एवं भौतिक विज्ञान की भी पढ़ाई होती थी।

भारतीय नव जागरण के अग्रदूत के रूप में राजा

राममोहन राय की भूमिका बड़ी महत्त्वपूर्ण है। इन्हांेने भारतीय धर्म और सभ्यता को अन्धविश्वासों से मुक्त कराने का प्रयास किया। उनका कहना था -

मैं केवल अन्धविश्वासों की आलोचना करता हूँ न कि धर्म की।राजा की उपाधि कैसे मिली

राममोहन राय के समय मुगल शासक कम्पनी से मिलने वाले धन से सन्तुष्ट नहीं था। उसने राम मोहन राय को अपना प्रतिनिधि बनाकर इंग्लैण्ड के शासक के पास भेजा।

इसी अवसर पर मुगल सम्राट ने उनको 'राजा' की उपाधि दी।

स्वातन्×य प्रेमी राजा राममोहन राय की राजनीति का आधारभूत सिद्धान्त उनका यह विश्वास था कि शासन की क्षमता भारतीयों में किसी से कम नहीं है। उन्होंने प्रशासन में सुधार के लिए आन्दोलन किए। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के विरुद्ध शिकायत लेकर राममोहन राय 8 अप्रैल 1831 ई0 को इंग्लैण्ड पहुँचे। वहीं से वे फ्रांस की राजधानी पेरिस गये। वे फिर इंग्लैण्ड वापस आये। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य खराब होता गया। इंग्लैण्ड के ब्रिस्टल नगर में 62 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। ब्रिस्टल नगर में आज भी उनका स्मारक बना हुआ है।

अभ्यास प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -

1. राजा राममोहन राय ने तिब्बत में किस बारे में अध्ययन किया ?
2. ''आत्मीय सभा'' में किस विचार धारा के लोग थे ? इसका प्रमुख उद्देश्य क्या था ?

3. ''वेदान्त कालेज'' की स्थापना कब हुई ? इसमें किन-किन विषयों की शिक्षा दी जाती थी?

4. राजा राममोहन राय के काल को क्या कहा जाता है ?

5. कालम 'अ' और कालम 'ब' के वाक्यांशांे को मिलाकर सही वाक्य बनाइए।

अ ब

राजा राममोहन राय का जन्म सन् 1821 में प्रकाशित किया।

पारिवारिक जीवन के निर्वाह के लिये उन्होंनें 22 मई 1772 ई0 को पश्चिम बंगाल के हुगली जिले के राधानगर में हुआ था।

ईश्वर एक है की अवधारणा को स्पष्ट ईस्ट इण्डिया कम्पनी में क्लर्क की

करने के लिए नौकरी कर ली।

''संवाद कौमुदी'' बंगला साप्ताहिक पत्र ''ब्रह्म सभा'' की स्थापना की।

6. सत्य कथन के सामने सही (√) तथा असत्य कथन के सामने गलत (ग) का निशान लगाइए।

Û राजा राममोहन राय की माता विदुषी महिला थीं।

Û राजा राममोहन राय ने सभी कार्य आजादी के लिए किए।

Û मुगल सम्राट ने राममोहन राय को 'राजा' की उपाधि दी।

Û राजा राममोहन राय ने समाज सुधार के अनेक कार्य किए।

7. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

Û काशी में राममोहन राय ने ..... का भी अध्ययन किया।

Û ब्रह्मसभा का नाम बदल कर ..... कर दिया गया।

Û राजा राममोहन राय का कहना था कि मैं केवल .....की आलोचना करता हँू न कि ..... ।

8. निम्न शीर्षकों के आधार पर राजा राममोहन राय पर लेख लिखिए-

जन्म तथा माता-पिता, शिक्षा, समाज सुधार के कार्य।